



Teachingninja.in



Latest Govt Job updates



Private Job updates



Free Mock tests available

Visit - teachingninja.in

27th BPSC Judicial Services

Previous Year Paper (Mains) (Law of Contracts and Torts) 2011



BIHAR JUDICIAL SERVICE EXAM. 2011
LAW OF CONTRACTS AND TORTS

संविदा तथा अपकृत्य विधि

TIME: 3 HRS.

M.M.: 150

Note: (1) Answer six questions, taking three from each part.
(2) All questions carry equal marks.

नोट: (1) प्रत्येक भाग से तीन प्रश्नों का उत्तर देते हुए कुल छः प्रश्नों के उत्तर दें।
(2) सभी प्रश्नों मान समान हैं।

PART-I

1. "An offer cannot be accepted unless and until it has been brought to the person to whom it is made." What is an offer? When is the communication of an offer completed? Illustrate with judicial decisions. Distinguish between offer and invitation to treat.
 "एक प्रस्ताव अन्यथा और जब तक जिसे किया गया है, उसके जानकारी में नहीं आ जाए स्वीकृत नहीं हो सकता।" प्रस्ताव क्यों है? प्रस्ताव की संसूचना कब पूर्ण होती है? न्यायिक निर्णयों का उल्लेख करते हुए व्याख्या कीजिए। प्रस्ताव एवं प्रस्ताव के लिए आमंत्रण में अन्तर कीजिए।
2. The two fundamental propositions of English law are 'privity of consideration' and 'privity of contract'. Elaborate the two principles and their acceptability in India.
 'प्रतिफल का संसर्ग' और 'संविदा का संसर्ग' अंग्रेजी विधि में दो मूलभूत अभिधारणाएँ हैं। दोनों सिद्धान्तों एवं उनकी भारत में स्वीकृति की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
3. The question whether the contract is void or voidable presupposes the existence of a contract within the meaning of the Act, and cannot arise in the case of an infant. In this context, explain the nature of a minor's agreement and its effectiveness. Can a minor be allowed to enforce a contract which is of some benefit to him? Explain.
 यह प्रश्न कि संविदा शून्य है या शून्यकरणीय संविदा अधिनियम के अर्थ में संविदा विद्यमान होने पर ही होता है और यह अवयस्क के वाद में उत्पन्न नहीं हो सकता। इस सन्दर्भ में अवयस्क के करार की प्रकृति एवं उसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिए। क्या कोई अवयस्क अपने कुछ फायदे के लिए संविदा का प्रवर्तन करा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
4. "An agreement to do an act impossible in itself is void." Referring this statement, explain the 'doctrine of frustration' and the specific grounds of frustration.
 "असम्भव कार्य करने का करार शून्य है।" इस कथन के सदर्भ में 'असम्भवता के सिद्धान्त' को स्पष्ट कीजिए और असम्भवता के विशिष्ट आधारों को बताइए।
5. Every party injured by the breach of a contract may bring an action for damages and every action for damages raises certain

problems. Discuss the problem raised in every action for damages. प्रत्येक पक्षकार जो सविदा के उल्लंघन से क्षतिग्रस्त हुआ है क्षतिपूर्ति के लिए दावा कर सकता है तथा प्रत्येक क्षतिपूर्ति की कार्यवाही में कुछ समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। क्षतिपूर्ति की प्रत्येक कार्यवाही में उत्पन्न समस्या को स्पष्ट कीजिए।

PART-II

6. The rule in Rylands v. Fletcher is interpreted in the light of the constitutional provisions by the Supreme Court in M.C. Mehta v. Union of India [(1987) 1 SC 395]. Explain the rule laid down in Rylands v. Fletcher. In reference to the said rule, elaborate the corresponding development in India with reference to the aforementioned statement.

रायलैण्ड बनाम फ्लेचर के नियम का एम० सी० मेहता बनाम भारत संघ [(1987) 1 SC 395] में उच्चतम न्यायालय द्वारा संवैधानिक उपबन्धों के प्रकाश में निर्वचन किया गया है। रायलैण्ड बनाम फ्लेचर में अभिनिर्धारित किए गए नियम की व्याख्या कीजिए। कहे गये नियम के सन्दर्भ में समतुल्य विकास के उपर्युक्त कथन के सन्दर्भ में व्याख्या कीजिए।

7. Sir Barnes Peacock, Chief Justice of the former Supreme Court of Calcutta, in P&O Steam Navigation Company v. Secretary of State for the Indian Council, held the Government liable for damages for injury due to negligence of some of its servants, as far back as in 1861. Subsequently, this decision was overruled in Kasturilal and Ralia Ram and the theory of sovereign immunity was upheld. In regard to this, discuss the concept of sovereign immunity and its development till date, with the help of judicial decisions.

भूतपूर्व उच्चतम न्यायालय, कलकत्ता के मुख्य न्यायाधीश सर बर्नेस पीकाक द्वारा पी० ऐंड ओ० स्टीम नेविगेशन कम्पनी बनाम राज्य सचिव, भारतीय परिषद् में बहुत पहले सन् 1861 में निर्धारित किया कि सरकार अपने नौकर के उपेक्षा द्वारा किए गए कार्य से हुई क्षति की क्षतिपूर्ति के लिए उत्तरदायी है। तदनन्तर इस निर्णय को कस्तूरीलाल और रलिया राम में रद्द कर दिया गया और सम्प्रभुता के सिद्धान्त को प्रतिरक्षा में सम्पादित किया गया। इसको विचार में लेते हुए तथा न्यायिक निर्णयों की सहायता से सम्प्रभुता की अवधारणा एवं आज तक, इसके विकास की व्याख्या कीजिए।

8. "In an action for malicious prosecution, the plaintiff has to prove, first, that he was innocent, and, second, that there was want of reasonable and probable cause." What is malicious prosecution? Explain the essentials to be proved in a suit for damages for malicious prosecution.

“विद्वेषपूर्ण अभियोजन की कार्यवाही में वादी को सिद्ध करना पड़ता है कि, प्रथम, वह निर्दोष था, तथा, द्वितीय, कि युक्तियुक्त एवं सम्भाव्य कारण का अभाव था।” विद्वेषपूर्ण अभियोजन क्या है? विद्वेषपूर्ण अभियोजन की क्षतिपूर्ति के वाद में आवश्यक तत्त्वों का वर्णन कीजिए जिनका साबित किया जाना आवश्यक होता है।

9. "The duty to take care arise out of various relations which it may not be possible to enumerate exhaustively and the courts recognize 'new duties' when they think that to be just."

In reference to the 'new duties' in the above statement, elaborate the concept of duty of care with reference to duty of care in medical profession.

“विभिन्न सम्बन्धों के बीच में उत्पन्न सावधानी का कर्तव्य जिसे विस्तृत रूप में वर्णित किया जाना सम्भव नहीं हो सकता और न्यायालय जब यह सोचता है कि ऐसा किया जाना उचित है तब एक 'नये कर्तव्य' की मान्यता देता है।” उपर्युक्त कथन में 'नये कर्तव्य' के सन्दर्भ में सावधानी के कर्तव्य की अवधारणा की चिकित्सा व्यवसाय में सावधानी के कर्तव्य के विशेष सन्दर्भ में व्याख्या कीजिए।

10. The maxim 'res ipsa loquitur' is not a rule of law. It is a rule of evidence benefiting the plaintiff by not requiring him to prove negligence.

Prove the above statement by explaining the maxim with reference to judicial decisions.

सूत्र 'रेस इप्सा लोक्वुटर' विधि का नियम नहीं है। यह एक वादी के फायदे के लिए साक्ष्य का नियम है जिसमें उसे उपेक्षा को साबित करना आवश्यक नहीं है।

उपर्युक्त कथन को न्यायिक निर्णयों के सन्दर्भ में उक्त सूत्र की व्याख्या द्वारा साबित कीजिए।